HAZRATE TALHA BIN UBEDULLAH

(HINDI BAYAAN)

हज़रते तल्हा बिन उबैदुल्लाह

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में

होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف

(तर्जमा : मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है :

"مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ کَانَتْ شَفَاعَۃٌ لَّہٗ عِنْدِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ जो शख़्स जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो बरोज़े क़ियामत उस की शफ़ाअ़त मेरे ज़िम्मए करम पर होगी।"

(کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاۃ علیہ علی آلہ، ۱/۲۵۵، الجزء الاول، حدیث: ۲۲۳۶)

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ो दुरूद दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोड़ो दुरूद

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرانی ج ۶ ص ۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب، تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ، اُذْکُرُوا اللّٰہَ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह 14, सूरतुन्नह़्ल, आयत 125 :

www.dawateislami.net

اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَ الۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से) और बुख़ारी शरीफ़ (हदीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَۃً या'नी ''पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अहकाम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ करूंगा ۞ अश्आर पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा (या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा) ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़हक़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर हत्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज अ़शरए मुबश्शरा या'नी वोह **10** सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن जिन को मालिके जन्नतो कौसर शाहे बहरो बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने जन्नत की बिशारत इरशाद फ़रमाई, इन में से एक जलीलुल क़द्र सहाबी की सीरते मुबारका के चन्द गोशे बयान करने की सआ़दत हासिल की जाएगी। सय्यिदी आ'ला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

वोह दसो जिन को जन्नत का मुज़्दा मिला उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

(हदाइके़ बख़्शिश मतबूआ़ मक्तबतुल मदीना स. **311**)

सब से पहले आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की सीरते मुबारका का एक वाक़िआ़ जो कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़बूले इस्लाम का सबब बना, बयान किया जाएगा। इस के बा'द इन अ़ज़ीम सहाबी رضی اللہ تعالٰی عنہ का नाम, नसब, कुन्यत, अल्क़ाबात और हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से इन के रिश्ते का ज़िक्र होगा। फिर इन का हुल्या, दुन्या से बे रग़बती, सख़ावत और चन्द फ़ज़ाइल पेश किये जाएंगे। आख़िर में इन के सफ़रे आख़िरत का ज़िक्रे ख़ैर करने के साथ साथ नाख़ुन काटने के मदनी फूल भी पेश किये जाएगे।

आइये अव्वलन एक हिकायत सुनते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बसरा का राहिब और कु़रैशी ताजिर

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के इज़्हारे नबुव्वत से क़ब्ल अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़बीले बनू तैम का एक ताजिर तिजारत की ग़रज़ से बसरा गया। जब बाज़ार पहुंचा तो क्या देखता है कि एक राहिब अपने इ़बादत ख़ाने (गिरजा घर) में मौजूद लोगों से कह रहा था : सर ज़मीने अ़रब से आने वाले उन मुअ़ज़्ज़ज़ ताजिरों से ज़रा येह तो मा'लूम करो कि क्या उन में कोई हरम (या'नी मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) का रहने वाला भी है ? तो वोह मुअ़ज़्ज़ज़ कुरैशी ताजिर आगे बढ़ कर बोला : जी हां ! मैं हरम का रहने वाला हूं। राहिब को मा'लूम हुवा तो उस ने बड़ी बेताबी से उस कुरैशी जवान से पूछा :'' क्या आप के हां अहमद नामी किसी हस्ती का ज़ुहूर हुवा है ?'' ताजिर ने पूछा : ''येह कौन हैं ?'' तो राहिब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का तआ़रुफ़ कुछ यूं कराया : ''येह हज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ تعالٰی عنہ के नूरे नज़र, हज़रते अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ के लख़्ते जिगर हैं। इन के ज़ुहूर का

www.dawateislami.net

माहे मुबारक येही है, वोह आख़िरी नबी हैं और उन का ज़ुहूर सर ज़मीने ह़रम (मक्कतुल मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) से होगा, फिर वोह उस जगह हिजरत करेंगे जहां की ज़मीन तो पथरीली और शोर ज़दा (नाक़ाबिले ज़राअ़त) होगी, मगर वहां खजूरों के बाग़ात कसरत से होंगे, तुम्हें तो उन की बारगाह में फ़ौरन ह़ाज़िर होना चाहिये।"

वोह क़ुरैशी ताजिर फ़रमाते हैं कि राहिब की बातें मेरे दिल में घर कर गईं और मैं फ़ौरन वहां से चल पड़ा यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا पहुंच कर ही दम लिया। मक्का शरीफ़ पहुंचते ही लोगों से पूछा कि कोई नई ख़बर है ? तो उन्हों ने बताया : "हां ! मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह जिन्हें हम अमीन के त़ौर पर जानते हैं, उन्हों ने नबुव्वत का दा'वा किया है और इब्ने अबी क़ुह़ाफ़ा (या'नी अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ) उन पर ईमान भी ले आए हैं।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और पूछा : "क्या आप नबिय्ये पाक صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم पर ईमान ले आए हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "हां ! और चलो तुम भी उन की बारगाह में ह़ाज़िर होने में देर मत करो क्यूंकि वोह ह़क़ की दा'वत देते हैं।"

ताजिर का दिल राहिब की बातों से इस्लाम की त़रफ़ माइल हो चुका था। आ़शिक़े अक्बर, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالیٰ عنہ की नेकी की दा'वत से भरपूर बातें सुन कर मज़ीद मुतअस्सिर हुवा और उस ने राहिब की तमाम बातें भी बता दीं। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ अपने क़बीले के उस नौजवान ताजिर को ले कर दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और बसरा के राहिब और आ़शिक़े अक्बर رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बातों से मुतअस्सिर होने वाला वोह क़ुरैशी ताजिर आख़िरे कार सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم के दामने बा बरकत से वाबस्ता हो कर मुसलमान हो गया और जब उस ने आप को राहिब की बातें बताईं तो आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم बहुत ख़ुश हुवे।

(دلائل النبوۃ للبیہقی، باب من تقدم اسلامہ من الصحابۃ، ج۲، ص۱۶۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरैश का येह ख़ुश नसीब ताजिर कोई और नहीं बल्कि अ़शरए मुबश्शरा में से एक प्यारे सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ थे। आइये ह़ुसूले बरकत और नुज़ूले रह़मत के लिये आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की मुबारक ज़िन्दगी के गोशों से मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल सुनते हैं :

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम व नसब, कुन्यत व लक़ब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ शर्ह़े सुनने अबी दावूद में आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का सिलसिलए नसब इस त़रह़ ज़िक्र करते हैं : ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह बिन उ़स्मान क़रशी तैमी मदनी (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) है, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की कुन्यत अबू मुह़म्मद है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم की ज़बाने ह़क़ परस्त से आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ को **अल फ़य्याज़, अल जूद** और **अल ख़ैर** के लक़ब अ़त़ा हुवे। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ ख़ुद बयान करते हैं कि ग़ज़वए उ़ह़ुद के दिन मक्की मदनी सरकार صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم ने मुझे **त़ल्ह़तुल ख़ैर**, ग़ज़वए अ़शीरह में **त़ल्ह़तुल फ़य्याज़** और ग़ज़वए हुनैन में **त़ल्ह़तुल जूद** के अल्क़ाबात से याद फ़रमाया। (المعجم الکبیر، الحدیث:۱۹۷، ج۱، ص۱۱۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी علیہ رحمۃ اللہ الھادی फ़रमाते हैं कि मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के आप رضی اللہ تعالٰی عنہ को इन अल्क़ाबात से नवाज़ने की वजह आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का कसरत से सख़ावत करना है। (فیض القدیر، حرف الطاء، تحت الحدیث: ۵۲۷۴، ج۴، ص۳۵۷)

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ मक्कए मुकर्रमा (زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا) के रहने वाले थे, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ के क़बीले बनू तैम से तअ़ल्लुक़ था, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से भी नसबी तअ़ल्लुक़ है अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ की त़रह़ आप का सिलसिलए नसब भी सातवीं पुश्त में (ह़ज़रते का'ब बिन मुर्रा पर) ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से जा मिलता है। (ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, स. 9 मुलख़्ख़सन)

ह़ुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم से रिश्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ का ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के ख़ानदान से एक ख़ास तअ़ल्लुक़ था और वोह इस त़रह़ कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رضی اللہ تعالٰی عنہا की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़म्ना बिन्ते जह़श رضی اللہ تعالٰی عنہا से शादी की थी और चूंकि येह दोनों अल्लाह عزوجل के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की फूफी सय्यिदा उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رضی اللہ تعالٰی عنہا की साह़िब ज़ादियां थीं। (यूं आप رضی اللہ تعالٰی عنہ प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के हम ज़ुल्फ़ भी थे।)

(ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, स. 35)

ह़ुल्या मुबारक

इमाम ह़ाकिम رضی اللہ تعالٰی عنہ ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ का ह़ुल्या मुबारक यूं बयान फ़रमाते हैं कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की रंगत सुर्ख़ी माइल सफ़ेद थी, क़द मुतवस्सित़ व दरमियाना था, सीना चौड़ा और शाने (कन्धे) कुशादा थे। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ जब किसी त़रफ़ मुड़ते तो पूरे रुख़ से मुतवज्जेह होते, ह़सीन चेहरे पर बड़ी ख़ूब सूरत बारीक सी नाक थी, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के पाउं बड़े थे और बड़ी तेज़ी से चला करते थे। (المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب طلحۃ بن عبید اللہ، ج٤، ص٤٤٩)

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ आ़म तौ़र पर उ़स्फ़ुर (ज़र्द रंग की एक बूटी जिस से कपड़े रंगे जाते हैं) से रंगा हुवा लिबास ज़ैबे तन फ़रमाया करते थे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ٤٧ طلحۃ بن عبید اللہ، ج٣، ص١٦٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने तमाम बेटों के नाम अम्बियाए किराम علیہم الصلوٰۃ والسلام के नामों पर रखे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم ۳۲ الزبیر بن عوام، ج۳، ص۷۴) आप رضی اللہ تعالٰی عنہ के ग्यारह बेटे और चार बेटियां थीं। बेटों के नाम येह हैं: (1) मुह़म्मद (2) इमरान (3) मूसा (4) या'क़ूब (5) इस्माईल (6) इस्ह़ाक़ (7) ज़करिय्या (8) यूसुफ़ (9) ईसा (10) यह़्या (11) सालेह़ رضوان اللہ تعالٰی علیہم اجمعین

अच्छे नाम रखना बच्चों का ह़क़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते मुबारका से पता चलता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों के नाम पर अपने बच्चों के नाम रखना सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सुन्नत है। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिये कि बच्चे का अच्छा नाम रखें कि येह उन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा है जिसे वोह उ़म्र भर अपने सीने से लगाए रखता है यहां तक कि जब मैदाने ह़श्र बपा होगा तो वोह इसी नाम से मालिके काइनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुलाया जाएगा। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा (बाप दादा) के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।" (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث ۴۹۴۸، ج۴، ص ۳۷۴)

इस ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने बच्चे का नाम किसी फ़िल्मी अदाकार, गुलूकार, फ़नकार, या (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) ग़ैर मुस्लिमों के नाम पर रख देते हैं, इस से बद तरीन ज़िल्लत क्या होगी कि मुसलमानों की अवलाद को कल मैदाने मह़शर में ग़ैर मुस्लिमों के नामों से पुकारा जाए।

उ़मूमन देखा जाता है कि हमारे मुआ़शरे में बच्चे के नाम के इन्तिख़ाब की ज़िम्मेदारी किसी क़रीबी रिश्तेदार मसलन दादी, फूफी, चचा वग़ैरा को सोंप दी जाती है और उ़मूमन शरई़ मसाइल से नावाक़िफ़ होने की वजह से वोह बच्चों के ऐसे नाम रख देते हैं जिन के कोई मआ़नी नहीं होते या फिर अच्छे मआ़नी नहीं होते, ऐसे नाम रखने से बचना चाहिये। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबारका और सह़ाबए किराम व ताबेई़ने इ़ज़ाम और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के नाम पर नाम रखे जाएं जिस का एक फ़ाइदा तो येह होगा कि बच्चे का **अल्लाह** वालों से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की बरकत से उस की ज़िन्दगी पर मदनी असरात भी मुरत्तब होंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चों के नाम रखने से मुतअ़ल्लिक़ शरई़ अह़काम जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 179 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**नाम रखने के अह़काम**" का मुत़ालआ़ कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब में मुफ़ीद मा'लूमात के साथ साथ आख़िर में अच्छे नामों की फ़ेहरिस्त भी दर्ज है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या से बे रग़बती व सख़ावत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपनी अवलाद के अच्छे नाम रखने के साथ साथ उन की अच्छी तर्बिय्यत भी करनी चाहिये। दुन्या की मह़ब्बत में मस्त रहने और धन कमाने की धुन में मगन रहने के बजाए उन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के साथ साथ नेकियों की त़रफ़ रग़बत और फ़िक्रे आख़िरत के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी देना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब व मह़बूब बन्दे ख़ास त़ौर पर ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن दुन्या

और इस की महब्बत से बे परवा होते हैं। हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ भी इन्ही मुबारक हस्तियों में से हैं आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने कभी दुन्या से दिल न लगाया और जो कमाया उसे जम्अ करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल करने के लिये राहे खुदा में लुटा दिया।

मन्कूल है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ को रात के वक्त हज़रमौत से सात (7) लाख दिरहम मौसूल हुवे तो परेशान और बेचैन हो गए। ज़ौजए मोहतरमा ने अर्ज़ की : "आज आप को क्या हुवा है ?" फ़रमाया कि मुझे येह फ़िक्र दामनगीर है (या'नी मैं इस वजह से बेचैन हूं) कि जिस बन्दे की रातें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इबादत करते हुवे गुज़रती हों, घर में इस क़दर माल की मौजूदगी में आज उस की बारगाह में कैसे हाज़िर होगा ? तो मदनी सोच रखने वाली आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ की ज़ौजा ने बड़े अदब से अर्ज़ की : इस में परेशानी की क्या बात है ? आप अपने नादार दोस्तों को क्यूं भूल रहे हैं ? सुब्ह होते ही उन्हें बुला कर येह सारा माल उन में तक्सीम करने की निय्यत फ़रमा लीजिये और इस वक्त बड़े इतमीनान के साथ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो जाइये। नेक बख़्त ज़ौजा की येह बात सुन कर आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ का दिल खुशी से सरशार हो गया और आप ने फ़रमाया : आप वाक़ेई नेक बाप की नेक बेटी हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह नेक बाप की नेक बेटी कोई और नहीं बल्कि **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ की आंखों की ठन्डक हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رضی اللہ تعالیٰ عنہا थीं।

चुनान्चे, सुब्ह होते ही हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने मुहाजिरीन व अन्सार में सारा माल तक्सीम करना शुरूअ कर दिया और इस में से कुछ हिस्सा **अमीरुल मोअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में भी भेजा। अचानक हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ की ज़ौजए मोहतरमा हाज़िर हुईं और अर्ज़ की : "ऐ अबू मुहम्मद ! क्या इस माल में घर वालों का भी कुछ हिस्सा है ?" तो इरशाद फ़रमाया : "आप कहां रह गई थीं, चलें जो बाक़ी बच गया है वोह सब आप ले लें।" फ़रमाती हैं कि जब बक़िय्या माल का हिसाब किया तो वोह सिर्फ़ एक हज़ार दिरहम ही रह गया था। (سیر اعلام النبلاء، الرقم ۷ طلحہ بن عبید اللہ، ج۳، ص۱۹ ـ مفہوماً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तिजारत का नफ़्अ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैदुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہ की तरह जो भी राहे खुदा में इख़्लास व अच्छी निय्यत के साथ माल ख़र्च करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या व आख़िरत में इस की बरकतों और अज्रो सवाब से नवाज़ता है।

चुनान्चे, पारह 2 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 245 में इरशाद होता है :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَہٗ لَہٗۤ اَضْعَافًا کَثِیْرَۃً ؕ وَاللّٰہُ یَقْبِضُ وَیَبْصُۜطُ وَاِلَیْہِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۲۴۵﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۴۵)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े हसन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और **अल्लाह** तंगी और कशाइश करता है और तुम्हें उसी की तरफ़ फिर जाना।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी علیہ رحمۃ اللہ الہادی "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : (अल्लाह عزوجل ने) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाले लुत़्फ़ो करम है। (क्यूंकि) बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा, ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह (बात) दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह इस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन (लाज़िमन) पाएगा और बहुत ज़ियादा पाएगा।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तल आयत : 245)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ का यौमिय्या नफ़्अ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती। आख़िरत में अज्रो सवाब की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल (अच्छा बदला) अ़त़ा किया जाता है और येह यक़ीनी बात है कि राहे ख़ुदा में देने से माल घटता नहीं बल्कि मज़ीद बढ़ता है जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "सदक़ा माल में कमी नहीं करता।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب استحباب العفو و التواضع، الحدیث ۲۵۸۸، ص ۱۳۹۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अपने परवर दगार عزوجل की राह में जो माल ख़र्च किया उस का ह़क़ीक़ी नफ़्अ़ तो यक़ीनन इन्हें आख़िरत में मिलेगा मगर दुन्या में भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہ इस की बरकतों से मह़रूम न रहे। चुनान्चे, मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ की यौमिय्या आमदनी एक हज़ार दिरहम से ज़ाइद थी। (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۹۶، ج۱، ص۱۱۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ को सदक़ा करने का कैसा इन्आ़म मिला कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की यौमिय्या आमदनी एक हज़ार दिरहम से ज़ाइद थी। और सदक़ात व ख़ैरात देने का मुआ़मला येह था कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़बीसा बिन जाबिर رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہ की सोह़बते बा बरकत में रहा तो मैं ने इन से बढ़ कर किसी को नहीं देखा जो बिन मांगे लोगों में कसीर माल बांटता हो। (المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۹۴، ج۱، ص۱۱۱) और येह भी मन्क़ूल है कि बसा अवक़ात आप رضی اللہ تعالٰی عنہ लोगों में इतना माल तक़्सीम फ़रमाते कि अपने लिये कुछ भी न छोड़ते। आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की ज़ौजा ह़ज़रते सो'दा बिन्ते औ़फ़ رضی اللہ تعالٰی عنہا बयान करती हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने एक दिन एक लाख दिरहम राहे ख़ुदा में सदक़ा किये और उस दिन आप رضی اللہ تعالٰی عنہ नमाज़ के लिये मस्जिद न जा सके क्यूंकि आप رضی اللہ تعالٰی عنہ का लिबास ऐसा न था जिसे पहन कर मस्जिद में चले जाते।" (موسوعۃ لابن الدنیا، کتاب إصلاح المال، باب فضل المال، الحدیث: ۹۷، ج۷، ص۴۲۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना तल्हा رضی اللہ تعالیٰ عنہ का जज़्बए ईसार भी खूब था कि आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अपनी तमाम तर आसाइशों को दूसरे मुसलमानों की ख़ातिर कुरबान कर दिया । आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ को ब खूबी मा'लूम था कि इस्लाम हमें बाहमी हमदर्दी का पैग़ाम देता है इसी लिये आप رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने ख़ैरख़्वाही करते हुवे अपनी ज़ात पर दूसरे मुसलमानों को तरजीह़ दी ।

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने अपनी माया नाज़ तालीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" में अपनी ज़ात पर दूसरों को तरजीह़ देने के मुतअ़ल्लिक़ एक बड़ी ही खूब सूरत हिकायत नक़्ल फ़रमाते हैं । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हजवैरी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "मैं ने शैख़ अह़मद ह़म्मादी सरख़सी رضی اللہ تعالیٰ عنہ से उन की तौबा का सबब पूछा, तो कहने लगे : "एक बार मैं अपने ऊंटों को ले कर "**सरख़स**" से रवाना हुवा । दौराने सफ़र जंगल में एक भूके शेर ने मेरा एक ऊंट ज़ख़्मी कर के गिरा दिया और फिर बुलन्द टीले पर चढ़ कर डकारने लगा, उस की आवाज़ सुनते ही बहुत सारे दरिन्दे इकठ्ठे हो गए । शेर नीचे उतरा और उस ने उसी ज़ख़्मी ऊंट को चीरा फाड़ा मगर खुद कुछ न खाया बल्कि दोबारा टीले पर जा बैठा, जम्अ़ शुदा दरिन्दे ऊंट पर टूट पड़े और खा कर चलते बने, बाक़ी मांदा गोश्त खाने के लिये शेर क़रीब आया कि एक लंगड़ी लौमड़ी दूर से आती दिखाई दी, शेर वापस अपनी जगह चला गया । लौमड़ी ह़स्बे ज़रूरत खा कर जब जा चुकी तब शेर ने उस गोश्त में से थोड़ा सा खाया । मैं दूर से येह सब देख रहा था, अचानक शेर ने मेरा रुख़ किया और ब ज़बाने फ़सीह़ बोला : "अह़मद ! एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्दाने राहे ह़क़ तो अपनी जान भी कुरबान कर दिया करते हैं । मैं ने इस अनोखे वाक़िए से मुतअस्सिर हो कर अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और दुन्या से किनाराकश हो कर अपने अल्लाह عزوجل से लौ लगा ली ।"

(کشف المحجوب، مترجم، ص ۳۸۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! भूके शेर ने अपना शिकार दूसरे जानवरों पर ईसार कर के भूक बरदाश्त करने की बेहतरीन मिसाल क़ाइम की और फिर अल्लाह عزوجل की अ़ता से उस ने कितनी ज़बरदस्त नसीह़त की, कि "एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्द को चाहिये कि अपनी जान कुरबान कर दे ।" सुल्ताने दो जहां صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (दूसरे को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह عزوجل उसे बख़्श देता है ।" (اتحاف السادۃ للزبیدی ج ۹ ص ۷۷۹)

हमें भूका रहने का औरों की ख़ातिर अ़ता कर दे जज़्बा अ़ता या इलाही

ईसार का सवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े

ऐ काश ! हमें भी ईसार का जज़्बा नसीब हो, अगर ख़र्च करने को जी नहीं चाहता तो बिग़ैर ख़र्च के भी ईसार के कई मवाक़ेअ़ मिल सकते हैं । मसलन कहीं दा'वत पर पहुंचे, सब के लिये खाना लगाया गया तो हम उ़म्दा बोटियां वग़ैरा इस निय्यत से न उठाएं कि हमारा दूसरा भाई उस को खा ले ।

गर्मी है कमरे के अन्दर या सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में मस्जिद के अन्दर कई इस्लामी भाई सोना चाहते हैं, ख़ुद पंखे के नीचे क़ब्ज़ा जमाने के बजाए दूसरे इस्लामी भाई को मौक़अ़ दे कर ईसार का सवाब कमा सकते हैं। इसी त़रह़ बस या रेल गाड़ी के अन्दर भीड़ की सूरत में दूसरे इस्लामी भाई को ब इस्रार अपनी निशस्त पर बिठा कर और ख़ुद खड़े रह कर, कार में सफ़र का मौक़अ़ मयस्सर होने के बा वुजूद दूसरे इस्लामी भाई के लिये क़ुरबानी दे कर उसे कार में बिठा कर और ख़ुद पैदल या बस वग़ैरा में सफ़र कर के, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ वग़ैरा में आराम देह जगह मिल जाए तो दूसरे इस्लामी भाई पर जगह कुशादा कर के या उसे वोह जगह पेश कर के, खाना कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो ख़ुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी त़रह़ के बे शुमार मवाक़ेअ़ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तक्लीफ़ दे कर मुफ़्त में ईसार का सवाब कमाया जा सकता है।

(मदीने की मछली, स. 27)

सख़ावत की ख़स्लत इनायत हो या रब | *दे जज़्बा भी ईसार का या इलाही*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिवायते ह़दीस में एह़तियात़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जज़्बए ईसार के बारे में सुना और ज़िमनन ईसार का सवाब कमाने के चन्द त़रीक़े भी सीखे। याद रहे ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में पाई जाने वाली येह पाकीज़ा आ़दात व सिफ़ात, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तर्बिय्यत का ही नतीजा है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अकसर अवक़ात जल्वए मह़बूब की ताबानियों से मह़ज़ूज़ (या'नी मसरूर व ख़ुश) हुवा करते, आप की सोह़बते बा बरकत में रहते हुवे हर मुआ़मले में रहनुमाई त़लब करते और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से बयान होने वाले फ़रामीन सुन कर न सिर्फ़ ख़ुद अ़मल करते बल्कि कमी बेशी के बिग़ैर इन्तिहाई एह़तियात़ के साथ लोगों तक पहुंचाते। अगर किसी बात में ज़र्रा बराबर भी शक होता कि येह अल्फ़ाज़ सरवरे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नहीं हैं तो कभी बयान न करते। येही वजह है कि बा'ज़ वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जो इब्तिदाए इस्लाम में ही ईमान लाए और ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत भी पाई मगर उन से बहुत से कम अह़ादीसे मुबारका मरवी है। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार भी उन जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में होता है जिन्हों ने बहुत कम अह़ादीसे मुबारका रिवायत की हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुल अड़तीस (38) अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं, इन में से तीन अह़ादीस बुख़ारी शरीफ़ में और चार मुस्लिम शरीफ़ में हैं।

(شرح ابی داؤد للعینی، کتاب الصلاۃ، باب مایستر المصلی، الحدیث: ۲۶۶، ج۳، ص ۲۴۲)

इसी त़रह़ दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी अह़ादीस बयान करने में एह़तियात़ से काम लेते। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने हौतकिय्या رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़दीस के मुआ़मले में बात की गई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : अगर मुझे येह डर न होता कि कहीं ह़दीस में मुझ से कमी बेशी न हो जाए तो मैं तुम्हें ज़रूर अह़ादीसे मुबारका बयान करता।" (طبقاتِ کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ج۳،ص:۲۲۱)

एक शख़्स ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़रगोश के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे ह़दीस में कमी बेशी नापसन्द है इस लिये मैं तुम्हें एक ऐसे शख़्स के पास भेजता हूं जो इस मुआ़मले में तुम्हारी रहनुमाई करेगा।" फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस शख़्स को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा। जब उस शख़्स ने उन से इस मुआ़मले में बात की तो उन्हों ने फ़रमाया : हम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ फ़ुलां फ़ुलां जगह पर थे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक ख़रगोश बत़ौरे तोह़फ़ा भेजा गया तो हम ने भी उस का गोश्त तनावुल किया।"

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الاطعمہ، فی اکل الارنب، ج۵،ص:۵۳۵،حدیث:۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने क़त़ई जन्नती सह़ाबी होने के बा वुजूद सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़दीस बयान करने के मुआ़मले में ह़द दरजा एह़तियात़ फ़रमाया करते थे, ह़ालांकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सफ़र व ह़ज़र दोनों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़वील रफ़ाक़त की सआ़दत ह़ासिल की थी। आप चाहते तो वोह ह़दीसे मुबारका ख़ुद भी बयान फ़रमा सकते थे लेकिन अपने अस्ह़ाब की तर्बिय्यत की ख़ात़िर उन्हें दूसरे साह़िबे इ़ल्म सह़ाबी के पास भेज दिया। बयान कर्दा रिवायत से जहां येह मा'लूम हुवा कि ख़रगोश का गोश्त खाना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित हैं वहीं येह भी मा'लूम हुवा कि अगर हमें किसी बात का सह़ीह़ त़रह़ से इ़ल्म न हो या इ़ल्म तो हो मगर उस में शक हो या हम इस कैफ़िय्यत में न हों कि इस सुवाल का सह़ीह़ जवाब दे सकें तो साइल या'नी सुवाल करने वाले को किसी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा सुन्नी आ़लिम या मुफ़्ती साह़िब की त़रफ़ भेज दें ताकि उन की सह़ीह़ रहनुमाई हो। खुसूसन क़ुरआनो सुन्नत और शरई अह़काम के मुआ़मले में एह़तियात़ बहुत ज़रूरी है, ख़ुद कोई जवाब देने के बजाए आ़लिम व मुफ़्ती से रुजूअ़ करने का मश्वरा दें इसी में दुन्या व आख़िरत की भलाई है, अपने क़ियास और अटकल से किसी को बिग़ैर तस्दीक़ के कोई शरई मस्अला बताने से सख़्त इजतिनाब करें। ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी को ग़लत़ मस्अला बता दिया और उस ने इस पर अ़मल कर लिया नीज़ उस ने आगे भी फैला दिया तो हो सकता है कि उन तमाम का वबाल भी हमारे गले में आ जाए।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़त चलने वाला अहम शो'बा **दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** रोज़ ब रोज़ तरक़्क़ी की मनाज़िल त़ै करता जा रहा है। इस वक़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, इस से मुन्सलिक मुफ़्तियाने किराम और दीगर उ़लमाए किराम तह़रीरी फ़तवा, नेशनल व इन्टर नेशनल फ़ोन नम्बर्ज़, वॉटस अप **(WhatsApp)**, वैब साइट, ई-मेल, मक्तूबात के जवाबात, तर्बिय्यती इजतिमाआ़त, मदनी चैनल, मदनी मश्वरों, कुतुब की तह़रीर व तफ़्तीश और साइलीन से बिल मुशाफ़ा, मुलाक़ात के ज़रीए़ मुसलमानों की शरई रहनुमाई में मश्ग़ूल हैं। आइये ! इस की चन्द झलकियां सुनते हैं।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान दारुल इफ़्ता की ग्यारह शाख़ों से माहाना कमो बेश 650 तह़रीरी फ़तवा जारी होते हैं और अब तक एक लाख से ज़ाइद तह़रीर फ़तावा जारी हो चुके हैं। हर माह दा'वते इस्लामी की वेब साइट पर मौजूद दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के सर्विस के ज़रीए मौसूल होने वाले 4000 (चार हज़ार) से ज़ाइद सुवालात के जवाबात (ब ज़रीए आवाज़) और दारुल इफ़्ता के ईमैल एडरेस **(darulifta@dawateislami.net)** के ज़रीए माहाना कमो बेश आठ सो (800) सुवालात के जवाबात नीज़ चार नेशनल मोबाइल नम्बर्ज़ और तीन इन्टर नेशनल नम्बर्ज़ के ज़रीए पाकिस्तान, यू के, यूरोप, अमरीका और दुन्या भर के मुसलमानों को माहाना कमो बेश दस हज़ार (10000) के क़रीब सुवालात के जवाबात दिये जाते हैं।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जमादिल ऊला ब मुताबिक़ सिने हिजरी 2 मार्च 2015 सिने ईसवी **(WhatsApp)** नम्बर भी ऑन कर दिया गया है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पहले ही दिन 1500 से ज़ाइद पैग़ामात मौसूल हुवे हैं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उम्मीद है कि इस सहूलत के ज़रीए भी माहाना हज़ारों साइलीन को शरई रहनुमाई फ़राहम की जाएगी नीज़ हर माह दारुल इफ़्ता में आने वाले साइलीन को कमो बेश साढ़े चार हज़ार (4500) से ज़ाइद ज़बानी जवाबात दिये जाते हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्तियाने किराम और दीगर उ़लमाए किराम की जानिब से काफ़ी अ़र्से से मदनी चैनल पर हफ़्ते में 8 सिलसिले दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, तीन सिलसिले अह़कामे तिजारत, फ़ैज़ाने इ़ल्म, फ़ैज़ाने इस्लाम, अस्बाक़े तसव्वुफ़ वग़ैरा बराहे रास्त पेश किये जाते हैं। इस के इ़लावा रिकॉर्ड सिलसिले भी मदनी चैनल की ज़ीनत बनते हैं। दारुल इफ़्ता का फ़ेस बुक पेज **(Facebook Page)** भी मौजूद है जिस पर मदनी चैनल पर होने वाले दारुल इफ़्ता के सिलसिलों के क्लिप, मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ की मुनासबत से फ़तावा और बहारे शरीअ़त से मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर मुन्तख़ब शुदा मसाइल को अपलोड **(Upload)** किया जाता है। फ़ेस बुक पेज **(Facebook Page)** का लिंक नोट फ़रमा लें।

(www.facebook.com/DaruliftaAhlesunnat)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तन्ज़ीमी मसाइल में शरई रहनुमाई के लिये बाबुल मदीना कराची और मर्कज़ुल औलिया लाहौर में इफ़्ता मक्तब क़ाइम किये गए हैं जिन में दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ मजालिस में किये जाने वाले कामों का शरई उसूलों के मुताबिक़ जाइज़ा लिया जाता है। नीज़ दा'वते इस्लामी के तह़्त सेंकड़ों मसाजिद, नई ता'मीर होने वाली मसाजिद, जामिअ़ातुल मदीना, मदारिसुल मदीना, दारुल मदीना और इजारा के शरई मुआ़मलात भी देखे जाते हैं। मुसलमानों को पेश आमदा जदीद मसाइल के ह़ल के लिये मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइय्या भी क़ाइम है जो कि दा'वते इस्लामी से वाबस्ता उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम पर मुश्तमिल है। आप से भी मदनी इल्तिजा है कि शरई मसाइल में रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से ज़रूर राबिता कीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शुजाअ़त के सत्तर (70) से ज़ाइद तमगे

हज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार उन जांनिसार सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان में होता है जिन्हों ने अपना तन मन धन सब कुछ राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने का अ़हद कर रखा था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये कई मवाक़ेअ़ पर शुजाअ़त व बहादुरी के जोहर दिखाए और अपनी जान की परवा किये बिग़ैर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हि़फ़ाज़त की ख़ात़िर कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिम्मत व शुजाअ़त का ज़िक्र करते हुवे अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ग़ज़्वए उहुद में जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे तो हम ने देखा कि मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हि़फ़ाज़त करते हुवे इन के जिस्मे अत़हर पर सत्तर (70) से ज़ाइद छोटे बड़े ज़ख़्म हैं और इन की उंगलियां भी कट चुकी हैं।

(معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، معرفۃ طلحۃ بن عبید اللہ، الحدیث:۳۶۹، ج۱، ص۱۱۲)

आप की शुजाअ़त व बहादुरी देख कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **''तल्हा के लिये (जन्नत) वाजिब हो गई ! ! !** (ترمذی، ج۵، ص۴۱۲)

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कई ग़ज़्वात में अपनी शुजाअ़त व बहादुरी दिखाई और बिल आख़िर जंगे जमल के दौरान ग्यारह जुमादिल उख़रा सिने 36 हिजरी (बरोज़ जुमा'रात) मरवान बिन ह़कम ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की टांग में एक तीर मारा, जिस से ख़ून की रग बुरी त़रह़ कट गई, जब इस का मुंह बन्द करते तो टांग फूल जाती और अगर छोड़ते तो कसरत से ख़ून बहने लगता। पस आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : इस को ऐसे ही छोड़ दो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के तीरों में से एक तीर है या'नी मेरी शहादत इसी के साथ मुक़द्दर की गई है। बस इसी के सबब 60 या 64 साल की उ़म्र में आप इस वत़ने इक़ामत को छोड़ कर वत़ने अस्ली में जा बसे।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، طلحۃ بن عبید اللہ التیمی، ج۲، ص۳۲۰۔ ملتقطاً)

किताब "करामाते सहाबा" का तआ़रुफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दिलचस्प किताब **''करामाते सहाबा''** में ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द सादिर होने वाली एक करामत तह़रीर है। करामत अ़र्ज़ करता हूं : पहले किताब करामाते सह़ाबा का कुछ तआ़रुफ़ आप की ख़िदमत में पेश करता हूं।

मक्तबतुल मदीना की येह ख़ूब सूरत और दीनी मा'लूमात से भरपूर किताब ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡغَنِی की तस्नीफ़ है जो 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है। इस किताब में आप رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की करामात ज़िक्र करने के साथ साथ करामात की ता'रीफ़, इस की अक़्साम और मिसालें बयान फ़रमाई हैं नीज़ फ़ज़ाइले अशरए मुबश्शरा और दीगर सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के मुख़्तसर

www.dawateislami.net

ह़ालात भी इस किताब में जा बजा ख़ुश्बूएं लुटा रहे हैं। दा'वते इस्लामी की इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी मजलिस अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या ने दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे इस किताब में मौजूद आयाते क़ुरआनिय्या, अह़ादीसे मुबारका, रिवायात व फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरहा की अस्ल माख़ज़ से ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज व तफ़्तीश का काम करने की सआ़दत ह़ासिल की है। दा'वते इस्लामी की वेब साइट **www.dawateislami.net** से इस किताब को **Read** (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाऊन लोड भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है। इसी किताब के सफ़ह़ा 118 पर है कि शहादत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बसरा के क़रीब दफ़्न कर दिया गया मगर जिस मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र शरीफ़ बनी वोह नशीब (गहराई) में था इस लिये क़ब्र मुबारक कभी कभी पानी में डूब जाती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक शख़्स को बार बार मुतवातिर ख़्वाब में आ कर अपनी क़ब्र बदलने का हुक्म दिया। चुनान्चे, उस शख़्स ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अपना ख़्वाब बयान किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दस हज़ार दिरहम में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मकान ख़रीद कर उस में क़ब्र खोदी और ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुक़द्दस लाश को पुरानी क़ब्र में से निकाल कर उस क़ब्र में दफ़्न कर दिया। काफ़ी मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुक़द्दस जिस्म सलामत और बिल्कुल ही तरोताज़ा था। (اسد الغابۃ، طلحۃ بن عبید اللّٰہ التیمی، ج۳، ص۸۷)

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता *ख़ुदा के पाक बन्दों का कफ़न मैला नहीं होता*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि कच्ची क़ब्र जो पानी में डूबी रहती थी उस में एक मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद एक सह़ाबी का जिस्म मुबारक सलामत और तरोताज़ा रहा तो ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस जिस्म की सलामती और शान का आ़लम क्या होगा जब कि हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे गिरामी भी मौजूद है : اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ (مشکوۃ، ص۱۲۱) (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है) इसी त़रह़ इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शुहदाए किराम अपने लवाज़िमाते ज़िन्दगी के साथ अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, क्यूंकि अगर वोह ज़िन्दा न होते तो क़ब्र में पानी भर जाने से उन को क्या तक्लीफ़ होती ? नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि शुहदाए किराम ख़्वाब में आ कर ज़िन्दों को अपने अह़वाल व कैफ़िय्यात से मुत्तलअ़ करते रहते हैं क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को येह क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह ख़्वाब या बेदारी में अपनी क़ब्रों से निकल कर ज़िन्दों से मुलाक़ात और गुफ़्तगू कर सकते हैं। अब ग़ौर फ़रमाइये कि जब शहीदों का येह ह़ाल है और उन की जिस्मानी ह़यात की येह शान है तो फिर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ास कर हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जिस्मानी ह़यात और उन के तसर्रुफ़ात और उन के इख़्तियार व इक़्तिदार का क्या आ़लम होगा ? आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाया है :

अम्बिया को भी अजल आनी है — मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर इस आन के बा'द उन की ह़यात — मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा, उन का — जिस्मे पुर नूर भी रूह़ानी है
येह हैं ह़य्ये अबदी उन को रज़ा — सिद्क़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 372)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान में हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरते मुबारका के बारे में सुना । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पाकीज़ा आ़दात व सिफ़ात मसलन दुन्या से बे रग़बत होना, ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करना, अपनी ज़ात पर दूसरे मुसलमान भाई को तरजीह़ देना, अह़ादीसे मबारका में कमी बेशी के ख़ौफ़ से बहुत कम रिवायात बयान करना, शुजाअ़त व बहादुरी दिखाना और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त के लिये अपनी जान की भी परवा न करना वग़ैरा के बारे में सुना । سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان किस क़दर पाकीज़ा सिफ़ात के मालिक हुवा करते थे और येह सब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत व तर्बिय्यत की बरकत से है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें इन मुबारक हस्तियों के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारने और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में रहते हुवे इख़्लास व इस्तिक़ामत से ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये । इन 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम चौक दर्स भी है याद रहे कि चौक दर्स में इ़ल्मे दीन ही की बातें बयान की जाती हैं और इसी त़रह़ चौक दर्स اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف و نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी भलाई की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) का भी एक बेहतरीन ज़रीआ़ है और इ़ल्मे दीन फैलाने नेकी की दा'वत देने के तो बे शुमार फ़ज़ाइल हैं चुनान्चे,

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाई जो तुम सदक़ा कर सको ?" फिर फ़रमाया : "बेशक سُبْحٰنَ اللّٰہ कहना सदक़ा है और اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सदक़ा है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना सदक़ा है और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف या'नी नेकी की दा'वत देना सदक़ा है और نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر या'नी बुराई से रोकना सदक़ा है । (صحیح مسلم ، کتاب الزکاۃ، باب بیان ان اسم الصدقۃ یقع..الخ، رقم ۱۰۰۶، ص ۵۰۳)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चौक दर्स में भी नेकी ही की दा'वत दी जाती है और बुराइयों से रोका जाता है तो अगर हम भी चौक दर्स में शिर्कत या'नी दर्स देने या सुनने वाले बन गए तो नेकी की दा'वत पर मब्नी अह़ादीस की फ़ज़ीलत اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमें भी ह़ासिल होगी। आइये हम भी निय्यत करते हैं कि जब भी मौक़अ़ मिला चौक दर्स में ज़रूर शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

आइये तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं।

लाइन्ज़ ऐरिया (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बयान दिया, मैं अपने घर की छत पर खड़ा था कि मेरी नज़र गली में खड़े दा'वते इस्लामी के एक बा इमामा इस्लामी भाई पर पड़ी जो अकेले ही चौक दर्स दे रहे थे एक भी इस्लामी भाई दर्स सुनने के लिये नहीं खड़ा था। मैं यूं तो दीन से अ़मली त़ौर पर इस क़दर दूर था कि सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाता था मगर न जाने क्यूं उन को तन्हा दर्स देता देख कर मुझे तरस आ गया सोचा कि चलो बे चारे के साथ कोई नहीं खड़ा तो मैं ही जा कर खड़ा हो जाता हूं चुनान्चे, मैं चोक दर्स में शरीक हो गया। मेरा चोक दर्स में शरीक होना मेरी इस्लाह़ का सबब बन गया और मैं मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने यहां मदनी इन्आ़मात का अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार हूं। एक दिन तो वोह था कि मैं सब्ज़ इमामे वालों को देख कर भाग जाया करता था और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज वोह दिन है कि खुद मेरे सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ का ताज जगमगा रहा है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج ۱ ص ۵۵ حدیث ۱۷۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت)

"یانبیَّ اللہ" के नव हुरूफ़ की निस्बत से
नाखुन काटने के 9 मदनी फूल

﴾1﴿ जुमुआ़ के दिन नाखुन काटना **मुस्तह़ब** है। हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (دُرِّمُختار ج ۹ ص ۶۶۸) **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा** मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि जो **जुमुआ़** के रोज़ नाखुन तरशवाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाखुन तरशवाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे।** (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۶۶۸، بہارِ شریعت حصّہ ۱۶ ص ۲۲۶،۲۲۵)

《2》 हाथों के नाखुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का खुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखुन काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये । अब उलटे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये । अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखुन काटा जाए । (دُرِّمُختار ج۹ص۶۷۰،اِحیاءُ العُلوم ج۱ص۱۹۳) 《3》 पाउं के नाखुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलियां समेत नाखुन काट लीजिये । (ऐज़न) 《4》 जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाखुन काटना मकरूह है । (عالمگیری ج۵ ص۳۵۸) 《5》 दांत से नाखुन काटना मकरूह है और इस से बरस या'नी **कोढ़** के मरज़ का अन्देशा है । (ऐज़न) 《6》 नाखुन काटने के बा'द इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी ह़रज नहीं । (ऐज़न) 《7》 नाखुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाखुन) बैतुल ख़ला या ग़ुस्लख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से **बीमारी** पैदा होती है । (ऐज़न) 《8》 बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहियें की बरस या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है । (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 22 सफ़ह़ा 574 से 685 तक मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये) 《9》 लम्बे नाखुन शैत़ान की निशस्त गाह हैं या'नी इन पर शैत़ान बैठता है । (اِتحافُ السّادۃ للزّبیدی ج۲ص۶۵۳)

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, ''**बहारे शरीअ़त**'' **ह़िस्सा 16 (312** सफ़ह़ात**)** नीज़ **(120)** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर **शबे जुमुआ़** (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत करेगा** और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं !**

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضًا ص ٦٥)

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां : جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات)

(6) क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net